परिचय

बाइबल की अन्य पुस्तकों से एस्तेर की पुस्तक भिन्न है। इस पुस्तक का शीर्षक एक महिला के नाम पर रखा गया है, इसमें एक ऐसे जेवनार का विवरण है जिसका पुराने नियम में कहीं भी वर्णन नहीं पाया जाता है, इस पुस्तक में परमेश्वर का नाम भी नहीं पाया जाता है, और नये नियम में इसका उल्लेख नहीं है। इस पुस्तक को दोनों, यहूदी एवं मसीही विद्वानों द्वारा बहुत सराहा जाता है और इस पर तीखा प्रहार भी किया जाता है। उदाहरण के लिए, "मध्यकालीन यहूदी विद्वान, मैमोनीडस ने इसे महत्वत्ता के आधार पर पंचग्रंथ के पश्चात स्थान दिया।"[1] इसके ठीक विपरीत, मार्टिन लूथर ने कहा, "मैं एस्तेर [की पुस्तक] का बड़ा शत्रु हूँ, काश! हम तक यह न पहुँची होती।"[2] इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि इस पुस्तक को समझने के लिए हमें इसके कई आरंभिक प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर समझना होगा।

नाम और वर्गीकरण

इस असामान्य पुस्तक का नाम इसके मुख्य चरित्र, एस्तेर के नाम पर रखा गया है, जो एक फारसी नाम है जिसका अर्थ "सितारा" है। उसके इब्रानी नाम "हदस्सा" का अर्थ "मेंहदी" है। इब्रानी बाइबल में इस पुस्तक का वर्गीकरण "लेख" के रूप में किया गया है। यह एक "मेगिलोथ" (या "चर्मपत्र"), पाँच लघु पुस्तक का संग्रह है जिसको यहूदियों के अलग-अलग पर्वों पर पढ़ा जाता था। यह हर वर्ष पुरीम के पर्व में पढ़ा जाता है।[3] अंग्रेजी पुराने नियम में इस पुस्तक का वर्गीकरण इतिहास की पुस्तकों में किया गया है और एज्रा और नहेम्याह की पुस्तक के साथ रखा गया है, क्योंकि ये तीनों पुस्तकें, बेबीलोन की बंधुआई उपरांत यहूदियों के इतिहास से संबंधित है।

लेखक तथा तिथि

यद्यपि कुछ प्राचीन स्रोत, "महान यहूदी आराधनालय के एक व्यक्ति"[4] या एस्तेर के चाचा मोर्दकै[5] को इस पुस्तक का लेखक मानते हैं; परंतु लेखक की पहचान के बारे में स्पष्ट प्रमाण नहीं पाया जाता है। इस पर प्रश्न उठाया जाता है कि क्या "महान यहूदी आराधनालय का एक व्यक्ति" एज्रा के समय में था, जैसा तालमूड कहता है। यदि मोर्दकै इस पुस्तक का लेखक है तो क्या वह स्वयं अपना विश्लेषण करने के लिए एस्तेर 10:3 की उच्चकोटी की भाषा प्रयोग करेगा। यद्यपि, पुस्तक कहती है कि मोर्दकै ने "इन बातों का वृतांत लिखा" (9:20), लेकिन संदर्भ से ऐसा प्रतीत होता है कि यह यहूदियों की उनके शत्रुओं पर विजय गाथा है और उसके पश्चात पुरीम का पर्व मनाया गया था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि जिसने भी यह

पुस्तक लिखी है उसने मोर्दकै के वृतांत के साथ-साथ "मादै और फारस के राजाओं के इतिहास की पुस्तक" का प्रयोग भी किया है (10:2; देखें 2:23; 6:1)। वह फारस का यहूदी रहा होगा जो इन वृतांतों का उपयोग कर रहा था।[6] उसका कार्य फारस की भाषा व सभ्यता का ज्ञान बताता है।

इस पुस्तक के लिखे जाने की तिथि अज्ञात है, यद्यपि एक आम सहमति यह है कि इस पुस्तक में जिन घटनाओं का वर्णन किया गया है वह ई.पू. 480 में घटित हुई होगी। यह क्षयर्ष की मृत्यु, जो लगभग ई.पू. 465 में हुई होगी, उससे पहले नहीं लिखी गई होगी, चूँकि पाठ से उसके शासनकाल के बारे में ऐसा प्रतीत होता है मानो उसका शासनकाल समाप्त हो गया था (1:1, 2; 10:1, 2)।

कुछ विद्वानों की मान्यता है कि एस्तेर की पुस्तक यहूदा के इतिहास के अंत की ओर, यहां तक कि मक्काबियों के समय, मसीह से पहले, द्वितीय सदी में लिखी गई थी। उदाहरण, रॉबर्ट एच. पैफर ने इस पुस्तक की तिथि जॉन हायरकेनस (ई.पू. 135-104) के शासनकाल के दौरान लगभग ई.पू. 125 में ठहराई है।[7] मक्काबियों का समय इसलिए सुझाया गया है क्योंकि उस समय के यहूदीवाद के विरोधियों ने यहूदी राष्ट्रवाद का विरोध किया था और यहूदियों को अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त हुई थी, इस विचारधारा के आधार पर एस्तेर की पुस्तक में वर्णित कहानी इसके लिए सर्वोत्तम पृष्ठभूमि प्रस्तुत करती है।

उपरोक्त वर्णित संभावित तिथियों के विपरीत, हमारे पास ऐसे कई कारण है जो हमको यह विश्वास करने के लिए विवश करती है कि यह पुस्तक इस तिथि से बहुत पहले लिखी गई थी। जॉन बेंडर-शमूएल के तर्कानुसार एस्तेर की पुस्तक में प्रयोग की गई इब्रानी भाषा, ईस्वी पूर्व दूसरी सदी में प्रयोग की गई इब्रानी भाषा में बहुत अंतर पाया जाता है जिसके बारे में कुमरान से पता चलता है। इस जागरूकता के कारण कुछ विद्वानों ने इस पुस्तक के लिखे जाने की पुरानी तिथि को त्यागा।[8] ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर का मानना है कि यह पुस्तक सिकन्दर महान की विजय गाथा, लगभग ई.पू. 330 से पहले फारस के साम्राज्य के दौरान लिखी गई होगी क्योंकि "एस्तेर की पुस्तक की भाषा या विचार धारा में यूनानी प्रभाव नहीं दिखाई देता है।"[9]

एस्तेर की पुस्तक के लिखे जाने की सबसे संभावित तिथि ईस्वी पूर्व पाँचवीं सदी के मध्य हो सकती है जो इस पुस्तक में वर्णित घटनाओं के समीप है। अध्याय 9 यह स्पष्ट करता है कि पुस्तक लिखे जाने से पहले ही पुरीम का पर्व मनाया जा रहा था जिससे इस बात की पुष्टि होता है कि इस घटना के घटने के पश्चात कुछ समय बीत चुका था। इससे यह संभावना उत्पन्न हो जाता है कि लेखक ने जो कहानी इस पुस्तक में लिखा है वह उसका गवाह रहा होगा; वह मोर्दकै का मित्र या सहयोगी हो सकता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

यहूदा के पाप के कारण, परमेश्वर ने यहूदियों को बेबीलोन की बंधुआई में

ई.पू. 586 में भेजा। फारसियों ने कुस्रू महान की अगुवाई में लगभग ई.पू. 539 में बेबीलोन को पराजित किया और उनके साम्राज्य को अपने साम्राज्य में विलय कर लिया। तब उन्होंने अपने साम्राज्य का विस्तार अन्य साम्राज्यों तक किया जो उस समय का सबसे बड़ा साम्राज्य हुआ और यह भारत से कूश तक फैल गया। फारसियों ने अपने साम्राज्य का विस्तार पश्चिम की ओर करने का प्रयास किया; लेकिन उनकी सेना को यूनानियों ने लगभग ई.पू. 480 में रोका और फिर उन्होंने अपने साम्राज्य का विस्तार तुर्की तक ही सीमित रखा।

बंधुआई उपरांत काल में यहूदी लोग फारसियों के अधीन रहे। कुस्रू ने यहूदियों को ई.पू. 538 में स्वदेश लौटने की अनुमति दी। स्वदेश लौटने वाले प्रथम दल की अगुवाई जरूब्बाबेल और/या शेशबस्सर ने किया (एज्रा 1:1-2:70), लेकिन वे बेबीलोन में ही ठहरे रहे। बाइबल में एक और स्वदेश लौटने का वर्णन पाया जाता है: एज्रा ने यहूदियों के एक और झुंड की अगुवाई ई.पू. 458 में की थी (एज्रा 7:1-8:32)। लगभग ई.पू. 445 में नहेम्याह यरूशलेम लौटा (नहेम्याह 2:1-11)। इसके पश्चात, कई यहूदी फारसी साम्राज्य में तितर-बितर होकर रह गए। उदाहरण के लिए, ईस्वी पूर्व पाँचवीं सदी में मिस्र के एलिफेंटाइन में मन्दिर के साथ यहूदियों का एक उपनिवेश था।

एस्तेर की कहानी का दृश्य, फारसी साम्राज्य की एक राजधानी, शूशन है।[10] उस समय का राजा अर्तक्षत्र था जिनकी पहचान क्षयर्ष प्रथम के रूप में की गई है, जिन्होंने ई.पू. 486-465 तक शासन किया था।[11] यह घटना, एज्रा और नहेम्याह के यहूदा लौटने से पहले, यहूदियों की प्रथम वापसी के पश्चात, लगभग ई.पू. 480 में घटित हुई होगी।

विषयवस्तु

पुस्तक, फारसी साम्राज्य के राजा अर्तक्षत्र द्वारा अपने सब हाकिमों और कर्मचारियों को बड़े भोज देने के वर्णन के साथ प्रारंभ होती है। उसने अपनी रानी वशती को भोज में उपस्थित अतिथियों के सम्मुख अपनी सुन्दरता दिखाने का आदेश दिया किन्तु उसने सबके सामने आने से इनकार कर दिया। परिणामस्वरूप, राजा ने उसे पटरानी के पद से हटा दिया (1:1-22)। उसने रानी के स्थान पर दूसरी रानी को नियुक्त करने के लिए एक प्रकार का रूप सौंदर्य प्रतियोगिता का आयोजन किया। एक यहूदिनी और एक अनाथ, एस्तेर, जिसे उसके चचेरे भाई ने उसे गोद लिया था, ने प्रतियोगिता जीती। लेकिन उसने अपनी राष्ट्रीयता, राजा या किसी अन्य व्यक्ति पर प्रकट नहीं की (2:1-20)। उसी समय, मोर्दकै को राजा की हत्या करने का षड्यंत्र पता चला और उसने इसकी सूचना दी, और उसने राजा का जीवन बचा लिया (2:21-23)।

जब मोर्दकै ने राजा के सबसे पसंदीदा कर्मचारी, हामान के सामने झुकने से इनकार किया, तो मोर्दकै के प्रति नामान की घृणा ने सब यहूदियों को नष्ट करने के लिए उसे प्रेरित किया। उसने राजा को एक आदेश जारी करने के लिए प्रभावित

किया कि किसी निश्चित तिथि पर ("चिट्ठी" या פּוּר, *पूर*, डालकर तय किया जाए) पूरे साम्राज्य के यहूदियों को नष्ट किया जाए और उनकी सम्पत्ति लूट लिया जाए (3:1-15)। जब मोर्दकै को इस षड्यंत्र के बारे में पता चला तो उसने एस्तेर को यहूदियों की ओर से राजा से हस्तक्षेप करने के लिए कहा। बिन बुलाये राजा के सम्मुख आने का अर्थ अपने जीवन को जोखिम में डालना है, जानकर भी एस्तेर ऐसा करने के लिए सहमत हुई (4:1-17)।

एस्तेर, राजा के सम्मुख उपस्थित हुई और राजा ने उसका स्वागत किया। तब उसने राजा और हामान को अपनी रानीवास में रात्रि भोज के लिए निमंत्रित किया। उसने इस भोज में यह निवेदन किया कि अगली रात्रि भी वे दोनों व्यक्ति एक और भोज के लिए आएं (5:1-8)। हामान घमण्ड करता हुआ घर लौटा कि राजा और रानी ने उसका सम्मान किया है।

उसकी पत्नी और मित्रों के सुझावानुसार, हामान ने पचहत्तर फुट ऊँचा फंदा बनाने का आदेश दिया। उसमें वह अपना शत्रु मोर्दकै को लटकाना चाहता था (5:9-14)।

उस रात्रि को राजा सो नहीं सका, इसलिए उसने अपने आधिकारिक लेख उसको पढ़े जाने का आदेश दिया। उससे उसको पता चला कि मोर्दकै, उसके प्राण बचाने का जिम्मेदार था लेकिन उसके बदले उसको सम्मानित नहीं किया गया था। अगले दिन राजा ने हामान से पूछा कि किसी को सम्मानित करने के लिए उसे क्या करना चाहिए। हामान ने सोचा कि राजा उसको सम्मानित करना चाहता है तो उसने उत्तर दिया कि उस व्यक्ति को राजकीय वस्त्र पहनाया जाए और उसे पूरे नगर में इस उद्धघोषणा के साथ घुमाया जाए कि राजा उसको सम्मानित कर रहा है। तब राजा ने हामान को आदेश दिया वह ऐसा मोर्दकै के लिए करे (6:1-14)।

दूसरे भोज में, एस्तेर ने उसके लोगों को मारे जाने के क्रूर षडयंत्र को प्रकट किया और उसने इस षडयंत्र के लिए हामान को जिम्मेदार ठहराया। राजा ने हामान को उसी फाँसी के फन्दे में लटकाया जो उसने मोर्दकै को लटकाने के लिए बनाया था (7:1-10)। चूँकि राजा की आज्ञा नहीं बदली जा सकती थी, इसलिए यहूदियों को अपने शत्रुओं से स्वरक्षा का अधिकार दे दिया गया (8:1-17)। इसका अंतिम परिणाम यह निकला कि यहूदियों ने अपने कई शत्रुओं को मार डाला और मोर्दकै, राजा का प्रधानमंत्री बना और यहूदियों ने अपना छुटकारा पुरीम का पर्व मनाकर मनाया (9:1-10:3)।

प्रभाव

यह पुस्तक मुख्य रूप से यहूदियों को उनके विनाश से बचाने पर प्रभाव डालती है जिसे परमेश्वर ने एस्तेर के द्वारा पूरा किया। इस कहानी के आरम्भिक भाग में सारे अवसर - एस्तेर का रानी बनना, मोर्दकै और यहूदियों के प्रति हामान का बैर, राजा के सम्मुख जाने के लिए मोर्दकै के द्वारा एस्तेर से निवेदन करना और अन्य घटनाएँ - यहूदियों के छुटकारे का एक मंच तैयार करते हैं।

सम्भावित रूप से, इस पुस्तक का सबसे अधिक लुभावना सत्य यह है कि इसमें परमेश्वर का वर्णन नहीं किया गया है।[12] फिर भी, प्रत्येक स्तर पर उसकी उपस्थिति महसूस की गई है। चार्ल्स आर. स्विनडोल्ल के शब्दों में ऐसा कहा जा सकता है, "बाइबल की किसी अन्य पुस्तक की तुलना में, एस्तेर, परमेश्वर के अदृश्य प्रबन्धन के प्रति एक श्रद्धांजलि है।"[13] जब यह कहानी सुनाती है तब सम्पूर्ण कहानी में परमेश्वर के हाथ का चलन देखने को मिलता है। पहली बार में ही पाठकों ने निश्चित रूप से यह पहचान की होगी कि अपने लोगों को छुड़ाने के लिए कहानी की विभिन्न घटनाओं में वह कार्यशील था। यहाँ तक कि ऐसा भी कहा गया है कि "इस पुस्तक का मुख्य पात्र परमेश्वर है।"[14]

इस प्रश्न पर प्रायः विचार विमर्श किया गया कि एस्तेर की पुस्तक परमेश्वर का वर्णन क्यों नहीं करती। इसके लिए विभिन्न उत्तर दिए गए हैं: (1) इस पुस्तक को पुराने नियम की "बुद्धि" की श्रेणी के भाग के रूप में और बुद्धि के साहित्य के रूप में देखा जाना चाहिए जो परमेश्वर अथवा धार्मिक क्रियाओं के बारे में बहुत कम ही बात करता है। (2) यह वर्णन इसलिए लिखा गया कि इसे फ़ारस के लेखाकार में शामिल किया जा सके; और लेखक ने सोचा कि यह उत्तम रहेगा कि प्रभु परमेश्वर का नाम हटा दिया जाए जिससे इसकी नकल करने वाला व्यक्ति प्रभु परमेश्वर के नाम के स्थान पर फ़ारस अथवा बेबीलोन के किसी ईश्वर का नाम न रखे। (3) परमेश्वर के नाम की अनुपस्थिति परमेश्वर के "छिपे होने" की ओर संकेत देती है। जब परमेश्वर स्वयं को छिपा लेता है - अर्थात जब वह अपने लोगों से अपनी उपस्थिति हटा लेता है - तब वह अपनी अप्रसन्नता की ओर संकेत देने के लिए ऐसा करता है। परमेश्वर शूशन के यहूदियों से (और यहूदा में पाए जाने वाले यहूदियों को छोड़, शायद पूरे अन्यजाति जगत के यहूदियों से) अप्रसन्न था। उन्होंने पवित्र देश की ओर लौटने के अवसर को ठुकरा दिया था और स्वयं यह पुस्तक मोर्दकै और एस्तेर के कामों में, उनकी आचरण और नैतिक सम्बन्धी कमियों को प्रकट करती है। परमेश्वर ने यह परिणाम प्रदान किया कि उनके विषय में इस पुस्तक में अपना नाम छोड़ दिए जाने के द्वारा उन यहूदियों को उसने स्वीकार नहीं किया; फिर भी, उसकी अस्वीकृति के बाद भी उन्हें बचाने के लिए वह एक झुकाव के साथ था।

ऐसा हो सकता है कि ये सुझाव स्वीकार करने योग्य हों फिर भी वास्तव में कोई नहीं जानता कि प्रेरित लेखक ने इस पुस्तक में परमेश्वर का नाम नहीं जोड़ने का चुनाव क्यों किया। शायद यह इस बात पर बल देने के लिए हटा दिया गया कि जिस समय परमेश्वर शान्त दिखाई दे तब भी अपने लोगों के लिए वह प्रबन्धन की दृष्टि से अब भी कार्यशील है।

उद्देश्य

इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य पाठकों को यह सुनिश्चित करने का रहा होगा कि उनके बिखरे होने के बाद भी परमेश्वर उन पर दृष्टि किए हुए था। वह निराशाजनक

परिस्थितियों में भी, सम्भावित रूप से अनपेक्षित माध्यमों अथवा तरीकों से, उन्हें बचा सका और बचाएगा। यह पाठ्य अन्य उद्देश्यों की भी पूर्ति करता है।

धार्मिक दृष्टिकोण से, यह महत्वपूर्ण सच्चाइयाँ प्रकट करता है। यह लोगों के जीवन में परमेश्वर के कार्य के बारे में महत्वपूर्ण पाठ सिखाता है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से, यह पुस्तक पूरीम पर्व के आरम्भ का वर्णन करती है। पंचग्रन्थ में मूसा के द्वारा परमेश्वर ने इस्राएल को जो व्यवस्था दी उस समय में इस पर्व का आरम्भ नहीं हुआ फिर भी बाद के वर्षों में इसे मनाया गया। इसका आरम्भ कैसे हुआ? इस प्रश्न का उत्तर एस्तेर देती है।

पक्ष समर्थक दृष्टिकोण से, इस पुस्तक का प्रयोग सम्भावित रूप से शूशन और फ़ारसी शासन में यहूदी उपस्थिति के बारे में बताने के लिए किया गया होगा। बाद के समय के कुछ राजा यह सोचकर आश्चर्यचकित हुए होंगे कि राजकीय कार्य में मोर्दकै (और शायद अन्य यहूदियों) को इस प्रकार की एक महत्वपूर्ण भूमिका क्यों प्राप्त थी और/अथवा किस बात ने पूरीम पर्व के लिए प्रेरित किया। उन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए और यहूदियों का एक ऐतिहासिक विवरण उपलब्ध करवाने के लिए एक फ़ारसी यहूदी ने तब यह घटना लिखी होगी। इस प्रकार के आरम्भ ने यह विवरण दिया कि लेखक ने राजा क्षयर्ष को किस प्रकार प्रस्तुत किया। राजा को बुरे के रूप में नहीं बताया गया परन्तु पाठ्य उसकी अयोग्यता की ओर संकेत देता है। बाद के समय के किसी राजा ने इस सच्चाई की सराहना की होगी कि राजा को आदर दिया गया परन्तु वह उस कहानी के प्रति क्रोधित नहीं हुआ होगा (परन्तु उसमें आनन्द लिया होगा) जिसने उससे पहले के राजा को एक अयोग्य व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया।

मूल्य

एस्तेर की कहानी उत्तेजक है, अनिश्चय के साथ है और मनोरंजक है। फिर भी, अपने लोगों के लिए परमेश्वर की देखभाल के बारे में यह महत्वपूर्ण पाठ सिखाती है। जब हम वर्तमान में परमेश्वर के लिए जीते हैं तब हम स्वयं को कुछ ऐसे सिद्धान्तों में बुना हुआ पाते हैं जिन्हें हमें लागू करने की आवश्यकता है।

यह परमेश्वर की योजना के प्रति यहूदी लोगों का महत्व प्रकट करती है। जब कहानी बताती है कि किस प्रकार परमेश्वर के प्रबन्धन के द्वारा यहूदी इस एक अवसर पर विनाश से बच गए तब यह अर्थ प्रदान करती है कि छुटकारे के लिए परमेश्वर की योजना में लोगों के रूप में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण थी। अब्राहम के वंश के द्वारा संसार को बचाने का वायदा परमेश्वर ने किया था। वह वायदा इस्राएलियों के द्वारा जारी रहा। अगर परमेश्वर ने इस्राएल के पूर्ण विनाश की स्वीकृति दे दी होती तो इसका अर्थ यह होता कि उसने पराजय के प्रति अपने उद्देश्य से हाथ खींच लिया है।

यह पुस्तक निश्चितता के साथ परमेश्वर के लोगों के “यहूदीवाद” पर बल देती है। एस्तेर के दस अध्यायों में लगभग पचास बार “यहूदी” शब्द इसके एकवचन

अथवा बहुवचन रूप में देखने को मिलता है - जो पुराने नियम की पुस्तकों में संयुक्त रूप से देखने की तुलना में अधिक बार है। एस्तेर में, मोर्दकै अपना विश्वास प्रकट करता है कि अगर उनके लिए मध्यस्थता करने में रानी असफल हो जाती है तब भी "यहूदियों का छुटकारा और उद्धार" हो जाएगा (4:14)। यहाँ तक कि अन्यजातियों ने घोषणा की कि मोर्दकै एक यहूदी है इसलिए हामान "उस पर प्रबल न होने पाएगा परन्तु उससे पूरी रीति से नीचा ही खाएगा" (6:13)। अन्यजातियों में अनेक लोग "यहूदी बन गए" क्योंकि उनके मन में यहूदियों का डर समा गया था (8:17)। पुस्तक यह बताते हुए समाप्ति करती है कि किस प्रकार "यहूदी मोर्दकै, क्षयर्ष राजा ही के नीचे था" (10:3)। यह सिद्ध करने का झुकाव रखा गया कि परमेश्वर की सहायता के कारण यहूदी अजेय थे अर्थात उन्हें हराया नहीं जा सका और जिस किसी ने उन्हें नष्ट करने का प्रयास किया वह स्वयं नष्ट कर दिया जाएगा।

अपने अत्यन्त जातिवाद होने के लिए इस पुस्तक की आलोचना की गई है; परन्तु जब इसे परमेश्वर के छुटकारे के उद्देश्य के सम्बन्ध में देखा गया तब यह यहूदियों की विजय के विषय में एक कहानी मात्र नहीं है। इसके स्थान पर यह परमेश्वर की योजना की विजय के बारे में है जिससे इस्राएल के चुनाव और संरक्षण के द्वारा परमेश्वर, मनुष्य को अपनी ओर लौटा कर ला सके। यहूदियों को नष्ट नहीं किया जा सका क्योंकि अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए परमेश्वर ने उनका प्रयोग करने का मन रखा।

यह परमेश्वर का प्रबन्धन प्रकट करती है। एस्तेर की कहानी यह बताती है कि अपनी इच्छा पूरी करने के लिए परमेश्वर किस प्रकार प्रबन्धन के साथ काम कर सकता है फिर चाहे वह एक अनजान वातावरण ही क्यों न हो। हालांकि पाठ्य में परमेश्वर का वर्णन नहीं किया गया फिर भी उसकी उपस्थिति महसूस की जा सकती है, वह घटनाओं में अगुवाई देता है और मार्ग दर्शन करता है जिसके कारण कहानी का निर्णायक परिणाम उसके उद्देश्य को पूरा करता है। एस्तेर से कहे गए मोर्दकै के शब्द परमेश्वर के प्रबन्धन में अपना (और लेखक का) विश्वास प्रकट करते हैं:

> तब मोर्दकै ने एस्तेर के पास यह कहला भेजा, "तू मन ही मन यह विचार न कर कि मैं ही राजभवन में रहने के कारण और सब यहूदियों में से बची रहूँगी। क्योंकि जो तू इस समय चुपचाप रहे, तो और किसी न किसी उपाय से यहूदियों का छुटकारा और उद्धार हो जाएगा, परन्तु तू अपने पिता के घराने समेत नष्ट होगी। क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिये राजपद मिल गया हो?" (4:13, 14)।

यह कठिन चुनौतियों के प्रति बुद्धिमानी के साथ प्रतिक्रिया करने की आवश्यकता प्रकट करती है। हालांकि यहूदी परमेश्वर के प्रबन्धन के द्वारा बचाए गए फिर भी मोर्दकै और एस्तेर के चतुर कामों ने उनके छुटकारे में योगदान दिया। इस कारण यह कहानी प्रस्तुत करती है कि अगर मानवीय मामलों में लोग अपनी ओर से उत्तम प्रयास करें और शेष कार्य के लिए परमेश्वर पर निर्भर हो जाएँ तो

परमेश्वर की इच्छा पूरी की जा सकती है।

यह अन्यजातियों के साथ यहूदियों के सम्बन्ध की झलक प्रदान करती है। अपने चारों ओर के अन्यजातियों के प्रति यहूदी किस प्रकार प्रतिक्रिया करें इसके बारे में निर्वासन के बाद के यहूदियों के द्वारा सामना किए जाने वाला एक अत्यन्त दबावपूर्ण प्रश्न यहाँ पर है। "देश देश के लोगों" के साथ अपने सम्बन्ध एज्रा और नहेम्याह की एक मुख्य चिन्ता रहे हैं जो निर्वासन पश्चात की अन्य दो ऐतिहासिक पुस्तकें हैं। फ़िलिस्तीन के बाहर रहने वाले यहूदी इस विषय पर विशेष चिन्ता रखते होंगे क्योंकि वे अन्य जातियों के लोगों से घिरे हुए थे।

यहूदियों को व्याकुल करने वाले प्रश्नों में ये प्रश्न अवश्य रहे होंगे: "अन्यजातियों के मध्य रहते हुए भी क्या हम अपना जीवन यापन कर सकते हैं अथवा समृद्ध हो सकते हैं?" "हमें अपने अन्यजाति पड़ोसियों से किस प्रकार की अपेक्षा रखनी चाहिए?" "अपने चारों ओर रहने वाले अन्यजातियों के प्रति हमें किस प्रकार का व्यवहार रखना चाहिए?" "जिस अन्यजाति शासन के अन्तर्गत हम जीते हैं उनसे हमें किस प्रकार की अपेक्षा रखनी चाहिए और उनके साथ हमारे सम्बन्ध किस प्रकार के होने चाहिए?" "क्या अन्यजाति शत्रुओं पर जय पाने के लिए हमारे पास कोई आशा है?" इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देने में सहायता पाने के लिए यह पुस्तक लिखी गई।

एस्तेर और मोर्दकै के अनुभवों के सन्दर्भ में, निम्नलिखित तरीकों में यहूदी चित्रित किए गए:

वे राजा और साम्राज्य के सहायक हैं (2:19-23)।
वे एक अलग नियम के द्वारा जीते हैं (3:8)।
उन पर झूठा दोष लगाया गया है कि वे राजा के कानून पर नहीं चलते (3:8)।
अधिकारियों के द्वारा उनका आदर किया गया है (6:1-11)।
वे प्रभुता में उच्च स्थान प्राप्त करते हैं (8:2; 9:3, 4; 10:2, 3)।
उनके पड़ोसियों के द्वारा उनकी सराहना की जाती है (8:15)।
सब लोग उनका आदर करते (उनसे डरते) हैं (6:13; 8:17; 9:2)।
वे अपने शत्रुओं पर विजेता रहते हैं (7:10; 8:1; 9:1, 5-10, 22)।

फ़ारसी साम्राज्य में रहने वाले यहूदियों को प्रमुख और समृद्ध होने के रूप में प्रस्तुत किया गया। मोर्दकै ऐसा दिखाई देता है कि वह इतना धनवान था कि वह राजा के राजभवन के फाटक में बैठकर अपने दिन बिता सकता था (2:21)। जब यह समाचार आया कि यहूदी नष्ट कर दिए जाएँगे तो इस सूचना ने पूरे शूशन नगर को बेचैनी में डाल दिया (3:15); और यह सत्य कि यहूदियों के शत्रुओं ने उनकी वस्तुओं का लालच किया, ऐसा सुझाता है कि सम्पूर्ण में वे समृद्ध थे (3:9-13)।

साथ ही, यह पुस्तक अन्यजातियों के द्वारा परमेश्वर के लोगों के साथ सम्बन्ध रखने के विभिन्न तरीकों पर विचार विमर्श करती है। (1) कुछ यहूदियों के शत्रु थे। उनके होने के बाद भी परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों को पूरा किया। वास्तव में वे मारे

गए और परिणाम के रूप में यहूदियों ने उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त की। (2) कुछ यहूदियों के मित्र थे और अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए परमेश्वर ने उन्हें चलाया कि वे विभिन्न भूमिकाएँ अदा करें। उदाहरण के लिए, जो व्यक्ति फ़ारस के राजा के जनानखाने का प्रधान था उसने एस्तेर और मोर्दकै की सहायता की (2:8-15)। फ़ारस का राजा क्षयर्ष अन्ततः, परमेश्वर के प्रबन्धन में, यहूदियों का हितकारी बन गया (8:1-10:3)। साथ ही, जब नियुक्त दिन को यहूदी अपने शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध करने लगे तब उनके प्रान्त के अन्यजाति शासकों ने उनकी "सहायता" की (9:3)। (3) एस्तेर 8:17 के अनुसार कुछ लोग यहूदी बन गए। यह कथन सुझाता है कि परमेश्वर ने उनका स्वागत अपने लोगों के भाग के रूप में किया और यह निश्चित रूप से ऐसा अर्थ प्रदान करता है कि इस्राएलियों के लिए भी आवश्यक था कि वे उन्हें स्वीकार करें।[15]

प्रथम दृष्टि में पाठक, पुस्तक में यहूदियों के सकारात्मक चित्र के द्वारा उत्साहित हुए होंगे और उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला होगा कि उन्हें उनके अन्यजाति पड़ोसियों से डरने की आवश्यकता नहीं थी। अन्ततः, परमेश्वर की सर्वोच्चता सब जातियों पर लागू होती है। अन्यजातियों के साथ अपने व्यवहार में यहूदी जानते थे कि प्रभु उन पर दृष्टि रखता है उनके चारों ओर रहने वाले लोगों में से कुछ लोग, उनके मित्र बनने के द्वारा अथवा उनके साथ जुड़ने के द्वारा उनकी सहायता कर सकते हैं।

व्याख्या

एस्तेर की पुस्तक की व्याख्या किस प्रकार की जानी चाहिए? यह अनेक सन्देहयुक्त नैतिक विषय उठाती है इसलिए यह प्रश्न उत्पन्न होता है: क्या वशती के लिए यह प्रशंसनीय था कि वह राजा के भोज में लोगों के सम्मुख आने से मना कर दे? क्या एस्तेर सौंदर्य प्रतियोगिता में प्रवेश ले पाती? क्या वह, एक यहूदी होते हुए एक विदेशी, एक अन्यजाति से विवाह कर पाती? क्या एस्तेर अपने पति से अपनी जातीयता छिपा कर रख पाती? क्या यहूदियों के शत्रुओं का घात करने के लिए एस्तेर और मोर्दकै के द्वारा राजा से स्वीकृति प्राप्त करना सही था?

टीकाकारों ने एस्तेर में प्रकट कमियों के प्रश्न तक विभिन्न तरीकों से पहुँच बनाई है। अति आलोचनात्मक लेखकों ने महसूस की जाने वाली नैतिक कमियों का उद्धरण इस पुस्तक को मूल्यहीन घोषित करने के लिए एक अच्छे कारण के रूप में किया है। अन्य टीकाकार ने, प्रेरणा में विश्वास करते हुए और विश्वास के योद्धा के रूप में एस्तेर और मोर्दकै की गिनती करते हुए, इन दो नायकों ने जो कुछ किया उसे न्यायोचित ठहराने की खोज की है। अन्य की पहुँच यह रही है कि पुस्तक की व्याख्या चिन्हों के अनुसार करने के द्वारा कहानी में प्रकट अनैतिक कार्यों को महत्वहीन बताया जा सके।

फिर भी, इस पुस्तक को समझने की उत्तम पहुँच यह है कि इसे मात्र एक ऐतिहासिक वर्णन के रूप में स्वीकार किया जाए और इसी के अनुसार इसकी

व्याख्या की जाए। पुराने नियम का इतिहास प्राथमिक रूप से इसलिए नहीं लिखा गया कि इसके योद्धाओं को एक अच्छे प्रकाश में प्रस्तुत किया जाए जिससे बाद की पीढ़ियाँ नैतिकता में उनसे पाठ सीख सकें। सामान्य रूप में, बाइबल के इतिहासकारों ने (उत्पत्ति से लेकर एस्तेर तक) नैतिक पाठ सिखाने का प्रयास नहीं करते हुए कहानियाँ उसी प्रकार सुनाई जैसे वे घटीं। (जब उन्होंने, अच्छे अथवा बुरे के लिए एक उदाहरण के रूप में बाइबल के किसी पात्र का प्रयोग करने की इच्छा रखी तब उन्होंने जो बिन्दु रखा वह स्पष्टता के साथ रखा।) उनका लक्ष्य, नैतिक अगुवाई उपलब्ध करवाने के स्थान पर, छुटकारे की अपनी योजना के द्वारा मानवजाति को अपनी ओर लौटा लाने के लिए काम करते समय परमेश्वर ने मनुष्य के मामलों में जो उसका काम था उसे प्रकट करना था। बाइबल के लेखकों ने यह निश्चित करने की ज़िम्मेदारी पाठकों पर छोड़ दी कि बाइबल के किसी चरित्र के भाग में किसी कार्य विशेष के लिए उसकी प्रशंसा की जानी चाहिए या उसे दोषी ठहराया जाना चाहिए। निःसन्देह, इस प्रकार के निर्णय लेने के लिए यह आवश्यक था वे व्यवस्था के नियमों का प्रयोग करें।

बाइबल के विद्यार्थियों को चाहिए कि वे ऐसा अनुमान नहीं लगाएँ कि परमेश्वर की स्वीकृति रखने वाले लोगों के द्वारा जो कुछ किया गया वह परमेश्वर के द्वारा स्वीकृत है। नूह, अब्राहम, मूसा, शिमशोन और हिजकिय्याह ने पाप किया। यिप्तह के द्वारा परमेश्वर को अपनी शपथ की पूर्ति के लिए जो सबसे पहले उससे मिलने के लिए आए उसे चढ़ाना आवश्यक रूप से प्रशंसनीय नहीं था। अतः, हमें यह अनुमान नहीं लगाना चाहिए कि एस्तेर और मोर्दकै ने जो कुछ किया वह परमेश्वर के द्वारा इसलिए स्वीकृत था क्योंकि अपने लोगों को बचाने के लिए परमेश्वर के द्वारा वे काम में लिए गए।

एस्तेर की पुस्तक की व्याख्या करते समय हम दो प्रश्नों का उत्तर देने की खोज करें: (1) इस कहानी में परमेश्वर क्या कर रहा था? (2) इस कहानी के सुनाए जाने के द्वारा परमेश्वर ने किस बात की पूर्ति करने की आशा की? हम इस बात में सुनिश्चित हो सकते हैं कि परमेश्वर ने उन लोगों को सिखाने की मनसा नहीं रखी जिन्होंने इस पुस्तक को पहले इसलिए पढ़ा कि वे सौंदर्य प्रतियोगिताओं में प्रवेश ले सकें अथवा अपने शत्रुओं का घात कर सकें।

शैली

साहित्यिक शैली

एस्तेर की पुस्तक को समझने में विद्वानों ने अपने प्रयास में इसे अनेक साहित्यिक श्रेणियों में रखा है। इसका वर्गीकरण "फ़ारसी इतिहास," "ऐतिहासिक समझ," एक "पूर्वदेशी कहानी," "अदालती संघर्ष की एक कहानी," "दरबार की एक कथा," एक ऐतिहासिक "उपन्यास," एक "*प्रवासी उपन्यास,*" एक "उपन्यास," एक "उत्सव की कथा," "ऐतिहासिक बनाई गई पौराणिक कथा," "लोक-साहित्य," और "प्रेम कहानी" के रूप में किया जा सकता है। तिमोथी एस. लानियाक ने कहा कि

इसे एक “उत्सव के विज्ञान (अर्थात पूरीम के आरम्भ के एक विवरण) के रूप में देखा जा सकता है जो संघर्ष की कहानी के प्रतिरूप के अनुसार चलती है।”[16] बाद में, जबकि इसी व्यक्ति ने कहा, “एस्तेर का लेखक निश्चित रूप से यह मनसा रखता है कि इस पुस्तक को इतिहास के रूप में पढ़ा जाए।”[17] इस कारण, हम इस पुस्तक को इस दृष्टिकोण से देखेंगे कि यह कलात्मक रूप से लिखी गई है परन्तु फिर भी यह एक इतिहास है।

साहित्यिक विशेषताएँ

एक साहित्यिक कार्य के रूप में एस्तेर एक रुचिकर और यहाँ तक कि मनोरंजक कहानी है। लेखन में साहित्यिक तकनीकें भरपूरी के साथ हैं। इनमें से निम्नलिखित इस प्रकार हैं:

पूर्वाभास देना। मोर्दकै, राजा का जीवन बचाता है। हालांकि यह सच्चाई आरम्भ में ही इस पुस्तक में लिख दी गई फिर भी कहानी में यह बाद में ही महत्वपूर्ण बन जाती है।

अच्छी तरह से विकसित पात्र। जब हम मोर्दकै और हामान के बारे में पढ़ते हैं तब उनका चरित्र हम पर प्रभाव डालता है। वे हमें याद हैं।

“सिन्ड्रेला” की कहानी। एक अनाथ लड़की, पराक्रमी फ़ारसी साम्राज्य की रानी बन जाती है।

अनिश्चय। क्या एस्तेर, राजा के सम्मुख जाने का निर्णय लेगी जबकि उसके द्वारा ऐसा करने का अर्थ मृत्यु को प्राप्त हो जाना भी हो सकता है? अगर वह राजा के सम्मुख जाती है और वह उसे बोलने की स्वीकृति दे देता है तब क्या यहूदियों को बचाने के लिए राजा सहमत होगा?

व्यंग्य के द्वारा हास्य प्राप्त किया गया। हामान ने नगर में से होकर जाते हुए मोर्दकै की अगुवाई की - अर्थात वह व्यक्ति जिससे वह संसार में सबसे अधिक घृणा करता है - जिसमें मोर्दकै राजा के घोड़े पर बैठा हुआ था और हामान ऊँचे स्वर से उसकी प्रशंसा कर रहा था।

विजेता नायक और पराजित खलनायक। “भले लोगों” अर्थात नायकों (वे यहूदी जिनका प्रतिनिधित्व मोर्दकै और एस्तेर के द्वारा किया गया) और “बुरे लोगों” अर्थात खलनायकों (यहूदियों के शत्रु जिनका चित्रण हामान के द्वारा किया गया) के बीच एक स्पष्ट अन्तर देखा जा सकता है। अन्त में, यहूदियों के शत्रु पराजित कर दिए गए जबकि स्वयं यहूदी समृद्ध होते चले गए।

काव्यात्मक न्याय। हामान उसी खम्भे पर जो उसने मोर्दकै के लिये तैयार कराया था, लटका दिया गया।

जो लोग बाइबल को परमेश्वर के द्वारा प्रेरित के रूप में स्वीकार करते हैं उन्हें एस्तेर की साहित्यिक कलात्मकता के बारे में क्या विश्वास करना चाहिए? अगर हम कहें कि कुछ ऐसा है जो कलात्मक रूप से लिखा गया है और इसमें साहित्यिक

लेखन शैली का प्रयोग किया गया है तब क्या हम इसकी सच्चाई अथवा इसकी प्रेरणा के बारे में प्रश्न करते हैं? आवश्यक रूप से ऐसा नहीं है।

नए नियम में हमारे पास महान साहित्य (उदाहरण के लिए, 1 कुरि. 13) के साथ-साथ महान धार्मिक शिक्षाएँ हैं। दृष्टान्त, प्रभावी रूप से सुनाई गई कहानियाँ हैं जो साहित्यिक कलात्मकता का प्रयोग करते हैं। उसी प्रकार, पुराने नियम की अनेक कहानियाँ इस तरीके से लिखी गईं जो उनके सुनने वालों और पढ़ने वालों को रुचिकर लगती हैं। तब सामान्य रूप में, हम कह सकते हैं कि परमेश्वर की प्रेरणा इस सम्भावना से मना नहीं करती कि प्रेरणा पाए हुए किसी व्यक्ति के द्वारा जो कुछ लिखा गया वह भी महान साहित्य हो सकता है।

कोई भी व्यक्ति एस्तेर के बारे में सच्चाइयों को जान सकता था परन्तु उन सच्चाइयों को एक साथ जिस प्रकार रखा गया - अर्थात अनिश्चय के साथ अथवा अनिश्चय के बिना, व्यंग्य, हास्य और इस प्रकार अन्य - वह लेखक पर निर्भर था। एस्तेर के लेखक ने इसकी कहानी को रुचिकर बना दिया जबकि कोई अन्य लेखक शायद ऐसा नहीं कर पाता। इसी समान प्रदान किए गए सत्य के साथ किसी घटना से कुछ लोग सच्चाई में बिना कोई परिवर्तन किए एक अच्छी कहानी तैयार कर सकते हैं - परन्तु अन्य ऐसा नहीं कर सकते। परमेश्वर ने एक गुणी लेखक का प्रयोग महान साहित्य का एक प्रेरित कार्य तैयार करने के लिए किया।

प्रश्न

“क्या यह ऐतिहासिक रूप से एकदम सही है?”

जिस समय इस पुस्तक के ऐतिहासिक होने की रक्षा की गई,[18] उसी समय कुछ विद्वानों ने इसके प्रति प्रश्न किया और इसे ऐसा बताया कि यह किसी काल्पनिक कथा के कार्य का रूप है[19] जिसे पूरीम पर्व के अस्तित्व का विवरण देने के लिए तैयार किया गया। अन्य इसे इस रूप में देखते हैं कि इसका कुछ भाग सच है और कुछ काल्पनिक है जो एक सच्ची घटना पर आधारित है जिसे बाद में लेखक के द्वारा सँवार दिया गया। आर. के. हैरिसन ने यह विचार प्रकट किया जिसे अनेक रूढ़ीवादी विद्वान थामे रहते हैं:

> ... इस पुस्तक को एक समृद्ध ऐतिहासिक केन्द्र होने का श्रेय देने के अनेक अच्छे कारण देखे जा सकते हैं। सम्भावनाओं के घेरे के अन्तर्गत यह ठीक है कि लेखक ने अपनी अभिनेत्री को एक आदर्श रूप में दिखाया और अपने विवरण को एक योग्य शिखर में लाने के लिए उसने कुछ साहित्यिक लेखन शैलियों और सजावटों को प्रयोग में लिया जो कल्पना और साहित्यिक कौशल के किसी भी लेखक के लिए उचित हैं। परन्तु ... यह मानने में कोई कठिनाई नहीं है कि क्षयर्ष के शासन के समय में, वह जिसके पास दूसरी पत्नी का पद था उसे किसी प्रकार के संकट को घुमा देने का माध्यम बनाया गया जो उसके देश के कुछ भाइयों के लिए धमकी था और इस आधार पर इस पुस्तक का वर्तमान वर्णन तैयार किया गया।[20]

फिर भी, पुस्तक की सम्पूर्ण ऐतिहासिकता के बचाव में अनेक तर्क दिए जा सकते हैं।

1. किसी घटना के होने की सम्भावना नहीं लगना सिद्ध नहीं करती कि वह घटित नहीं हुई। हमारे व्यक्तिगत जीवन में प्रायः असम्भव घटनाएँ घटती हैं। जो विश्वास करते हैं कि परमेश्वर इतिहास में काम करता है वे जानते हैं कि वह अपनी दिव्य इच्छा में ऐसा करता है कि असम्भव घटना घटित हो।

2. यह सच्चाई कि इस पुस्तक में बताई गई घटनाएँ सांसारिक इतिहासकारों के द्वारा रिकॉर्ड नहीं की गई, सिद्ध नहीं करती कि वह घटित नहीं हुई। आधुनिक इतिहासकारों के समान प्राचीन इतिहासकारों ने जो कुछ घटित हुआ उन सब बातों का रिकॉर्ड नहीं रखा और न ही उनके विवरण सदैव पूरी तरह से शुद्ध हैं।

3. सब विद्वान पहचान करते हैं कि यह पुस्तक शुद्धता के साथ, क्षयर्ष के दिनों में फ़ारसी अदालत के समय के जीवन का चित्रण करती है। एफ़. बी. ह्युई जुनियर ने, उदाहरण के लिए, कहा कि अनेक "फ़ारसी नामों और उधार लिए गए शब्दों" और "फ़ारसी रीति रिवाज़ों के बारे में लेखक के निकट ज्ञान और शूशन और फ़ारस के शाही महलों की स्थलाकृति" के द्वारा एस्तेर की आरम्भ की दिनांक सुझाई गई।[21] घटना की ऐतिहासिकता के सुझाव के लिए इन्हीं तथ्यों का प्रयोग किया जा सकता है।

4. अत्यन्त उपयुक्तता के साथ देखा जा सकता है कि एस्तेर में सुनाई गई कहानी, उस समय में पूरीम पर्व के आरम्भ को दस्तावेज़ के रूप में लिखने के लिए लिखी गई और पूरीम पर्व का आरम्भ अज्ञात था और इसका विवरण देने के लिए एस्तेर की कहानी गढ़ी गई। यहूदियों के द्वारा पूरीम पर्व को मनाया जाना एस्तेर में सुनाई गई कहानी की शुद्धता पर तर्क करता है।

5. कहानी में ऐतिहासिक दिखाई नहीं देने वाले पहलुओं को प्रायः सन्तुष्टि के साथ समझाया जा सकता है। प्रकट कठिनाइयों का उत्तर सम्भावित पुनः निर्माण दे सकते हैं।

ऐतिहासिक चुनौतियों के एक उदाहरण के रूप में हम क्षयर्ष की पत्नियों के नामों के प्रश्न पर विचार कर सकते हैं। फ़ारस की अदालत के किसी अन्य विवरण में कोई रिकॉर्ड, रानी के रूप में सेवा करते हुए वशती अथवा एस्तेर के बारे में नहीं बताता। क्षयर्ष की एकमात्र रानी जिसका वर्णन यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस (484-425 ई.पू.) के द्वारा किया गया वह ओटेन्स की पुत्री एमेस्ट्रिस[22] थी। उसका चित्रण एक अत्यन्त क्रूर और प्रतिशोधी महिला के रूप में किया गया;[23] और हो सकता है कि पुस्तक में पायी जाने वाली सूचना के आधार पर हम वशती अथवा एस्तेर की पहचान उसके साथ करने से हिचकिचाएँ। फिर भी, यह सम्भव है कि "वशती" फ़ारस की रानी एमेस्ट्रिस का मात्र दूसरा नाम हो।[24] अन्य सम्भावना यह है कि क्षयर्ष का जनानखाना एक से अधिक रानियों को शामिल करता हो जबकि हेरोडोटस ने मात्र एक ही नाम का विवरण दिया हो।[25]

“क्या यह कैनन का स्तर रखती है?”

ये प्रश्न उठाए गए कि क्या यह पुस्तक कैनन का स्तर रखती है - अर्थात यह सही तरह से-पुराने नियम के कैनन (प्रेरित पुस्तकों की सूची) के साथ सम्बन्ध रखती है। कुछ यहूदियों ने इसके बारे में प्रश्न किया। यह पुस्तक मृत सागर मसौदों में नहीं पायी गयी जो एक ऐसा सत्य है जो सम्भावित रूप से यह सुझाएगा कि कुमरान पंथ ने इस पुस्तक को स्वीकार नहीं किया क्योंकि यह उनके ईश ज्ञान के साथ सहमति नहीं रखती थी। फिर भी, अनेक साक्ष्य हैं - जिसमें पूरीम पर्व मनाया जाना शामिल है - जो बताते हैं कि इसे अत्यधिक आरम्भिक दिनांक से यहूदियों की एक बड़ी संख्या के द्वारा पुराने नियम के कैनन के एक भाग के रूप में स्वीकार किया गया।[26] ह्युई ने कहा, “एस्तेर की पुस्तक ने यहूदी लोगों के द्वारा शीघ्र और विस्तृत स्वीकारोक्ति प्राप्त की होगी क्योंकि इसने उनके शत्रुओं पर दुर्लभ विजय के विवरण को सुरक्षित रखा।” फिर भी, उसका ऐसा कहना था, “साथ ही, हालांकि कैनन के अनुसार अपने स्तर के बारे में इस पर कोई सन्देह नहीं किया जा सकता फिर भी इसकी प्रतिशोधी आत्मा और धार्मिक और नैतिक शिक्षाओं की कमी के कारण इस पुस्तक के प्रति कभी कभार विरोध देखा गया।”[27]

“क्या ’एस्तेर में कुछ बातें जोड़ी गई’ हैं?”

एक अन्य समस्या इब्रानी बाइबल (मसोरेटिक टेक्स्ट [MT]) से अनुवादित अंग्रेज़ी बाइबल में एस्तेर के पाठ्य के साथ जोड़ती है। मसीही/प्रोटेस्टेन्ट बाइबलों में पाए जाने वाले पाठ्य के साथ, अपोक्रिफा, “एस्तेर में जोड़ी गई बातें” शामिल करता है। ये पद यूनानी सेप्टुआजिंट (LXX) में पाए गए परन्तु MT में नहीं पाए गए।

एस्तेर में जोड़ी गई बातें, इस पुस्तक में किसी व्यक्ति के द्वारा जोड़ दी गईं जिसका ऐसा मानना था कि एस्तेर की पुस्तक पर्याप्त मात्रा में “धार्मिक” पुस्तक नहीं है और विशेष रूप से इसलिए कि इसने परमेश्वर का[28] अथवा यहूदी धार्मिक अभ्यासों का वर्णन नहीं किया।[29] पवित्र यहूदी पाठकों के लिए यह पुस्तक अधिक रुचिकर बनाई जा सके इसके लिए अनेक स्थानों में सामग्री जोड़ने के द्वारा पहचान की गई इस कमी की क्षतिपूर्ति ये जोड़ी गई बातें करती हैं। जैसा कि ये संयोजन अपोक्रिफा में पाए गए और इस कारण कैथोलिक बाइबलों में पाए गए इसलिए कोई भी व्यक्ति तर्क नहीं करता कि ये, एस्तेर के मूल इब्रानी पाठ्य का भाग थे। मार्क मांगानो ने कहा कि वे 107 आयतें जो जोड़ी गई बातें प्रदान करती हैं वे “थोड़े अथवा बिना ऐतिहासिक मूल्य के साथ हैं।”[30]

“क्या हमारे पास एस्तेर का मूल पाठ्य है?”

विद्वान कभी-कभी एस्तेर की पुस्तक के एक अन्य संस्करण के बारे में बात करते हैं जो “अल्फा पाठ्य” कहलाता है। इसका विवरण निम्नलिखित रूप में माइकल वी. फ़ोक्स के द्वारा दिया गया:

यह [अल्फा पाठ्य] दसवीं से तेरहवीं शताब्दी ईसवीं की दिनाँक प्रदान करने वाली पाँच यूनानी [हस्तलिपियों] में सुरक्षित किया गया। मूल रूप से यह [MT] के समान ही कहानी सुनाता है परन्तु शब्दों और अनेक विवरणों में यह इससे और साथ ही मुख्य यूनानी संस्करण LXX से अत्यधिक अन्तर रखता है जिसकी तुलना में इसे सामान्य रूप से एक पुनः अवलोकन माना गया।[31]

कुछ विद्वानों का मानना है कि अल्फा पाठ्य, एस्तेर के LXX संस्करण का एक पुनः अवलोकन होने के स्थान पर एक स्वतन्त्र वर्णन है जो MT में पायी गई एस्तेर की इब्रानी पुस्तक से पहले के एक इब्रानी संस्करण पर आधारित है। फिर भी, इस प्रकार की परिकल्पना मात्र विद्वानों की कल्पना बनी रहती है। यह टीका, एस्तेर के पाठ्य पर ठीक उसी प्रकार विचार विमर्श करेगी जैसा इब्रानी बाइबल में देखने को मिलता है, जिसे मसीही युग से पूर्व में यहूदियों के द्वारा परमेश्वर के आधिकारिक वचन के रूप में स्वीकार किया गया।

रूपरेखा

यह पुस्तक एक ऐसे वर्णन के साथ है जो एक छोटे उपन्यास का रूप लेती है। कहानी का जमाव इसकी रूपरेखा प्रस्तुत करता है। प्रथम दो अध्याय (जो स्वयं एक उत्तेजक कहानी सुनाते हैं) उपन्यास में होने वाली घटना के चरण स्थापित करते हैं। अध्याय 3 में वह घटना शामिल है जो उस संघर्ष को उपलब्ध करवाती है जो बदले में, कहानी में घटने वाली अन्य सब बातों के लिए अगुवाई देती है। अध्याय 4 से 10 प्रकट करते हैं कि किस प्रकार एक बेखबर घटना में शामिल संघर्ष से उठी समस्या का समाधान किया गया जिसके कारण परमेश्वर के लोग छुड़ा लिए गए और वास्तव में अपनी पिछली दशा से अच्छी दशा में ले आए गए। निम्नलिखित रूपरेखा सरल है:

I. पृष्ठभूमि: एस्तेर रानी बन जाती है (अध्याय 1; 2)
II. संघर्ष: हामान यहूदियों का नाश करने की योजना बनाता है (अध्याय 3)
III. समाधान: यहूदी, एस्तेर के द्वारा बचा लिए गए (अध्याय 4-10)

मांगानो ने इस पुस्तक के लिए एक अन्य रूपरेखा का प्रस्ताव रखा। उसने एक विद्वान का संकेत दिया जिसका ऐसा मानना था कि पुस्तक का प्राथमिक ढाँचा बदलावों को शामिल करता है जो परमेश्वर के प्रबन्धन के द्वारा लाए गए और इस तथ्य के साथ रखते हुए इसे कियेस्टिक साहित्यिक तकनीक[32] के साथ निम्नलिखित रूप में व्यवस्थित किया गया:

I. आरम्भ और पृष्ठभूमि (अध्याय 1)
II. राजा की प्रथम आज्ञा (अध्याय 2; 3)
III. हामान और मोर्दकै के बीच टकराव (अध्याय 4; 5)
IV. "उस रात राजा को नींद नहीं आई" (6:1)
III'. हामान पर मोर्दकै की विजय (6:2-7:10)
II'. राजा की दूसरी आज्ञा (अध्याय 8; 9)
I'. उपसंहार (अध्याय 10)[33]

यह अन्तिम रूपरेखा वह है जिसका प्रयोग इस अध्ययन के लिए किया जाए:

I. रानी वशती पद से हटा दी गई (1:1-22)
II. एस्तेर रानी बनती है (2:1-18)
III. मोर्दकै राजा का प्राण बचाता है (2:19-23)
IV. यहूदी, हामान के कारण विनाश का सामना करते हैं (3:1-15)
V. एस्तेर, हामान की योजना का सामना करने के लिए सहमत होती है (4:1-5:4)
VI. हामान दोषी ठहराया जाता है और दण्डित किया जाता है (5:5-7:10)
VII. यहूदी बचा लिए गए और वे पूरीम पर्व मनाते हैं (8:1-10:3)

अनुप्रयोग

हमारे संसार में परमेश्वर का कार्य

अध्याय 2 के अन्त तक एस्तेर की कहानी से सदा काल के लिए कम से कम तीन पाठ सीखे जा सकते हैं। ये परमेश्वर की योजना, परमेश्वर के उद्देश्यों और परमेश्वर के लोगों के साथ जोड़ते हैं। (1) जब इस संसार की घटनाएँ शारीरिक अथवा सांसारिक हैं तो इससे परमेश्वर की योजनाएँ रोकी नहीं जा सकती। (2) नैतिक अथवा वैवाहिक असफलताओं के द्वारा परमेश्वर के उद्देश्य निष्फल नहीं हैं। (3) असमर्थता अथवा कठिनाई के कारण परमेश्वर के लोग उच्च स्थानों से अलग नहीं किए गए।[34]

समाप्ति नोट्स

[1]डब्ल्यु. ली हम्फ्रेज़, "एस्तेर," इन *हार्पर्स बाइबल डिक्शनरी*, एड. पॉल जे. आक्टिमायर (सेन फ्रान्सिसको: हार्पर & रो, 1985), 281-82. टीकाकार नोट करते हैं कि यहूदियों के मध्य इस पुस्तक ने सदैव महान प्रसिद्धि प्राप्त की है। [2]मार्टिन लूथर, "ऑफ़ गॉड्स वर्ड," *टेबल टॉक*, ट्रान्स. विलियम हेज़लिट्ट (प्रकाशन का स्थान अज्ञात: क्रिश्चियन क्लासिक्स अथिरियल लाइब्रेरी, तिथि अज्ञात), 27. [3]पूरीम पर्व "एस्तेर की पुस्तक में दिए गए वर्णन पर आधारित यहूदी कलेन्डर का एक छोटा अवकाश है ... तलमूड के अभ्यास के अनुसार पूरीम के दिन यहूदी सभाग्रह में मेगिल्लाह (एस्तेर का मसौदा) पढ़ा जाता है, दान का वितरण किया जाता है, भोजन की भेंटों का आदान प्रदान किया जाता है और

पर्व का भोज खाया जाता है" (लोरेन्स एच. स्किफ़मैन, "पूरिम, द फ़ीस्ट ऑफ़," में *हार्पर्स बाइबल डिक्शनरी*, 843). [4]तलमूड *बाबा बथ्रा* 15a. [5]क्लेमेन्ट ऑफ़ एलेक्सेन्ड्रिया *मिसिलनीज़* 1.21. [6]आर. के. हैरिसन, *इन्ट्रोडक्शन टू द ओल्ड टेस्टामेन्ट* (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1969), 1087. [7]रॉबर्ट एच. फ़ाइफ़र, *इन्ट्रोडक्शन टू द ओल्ड टेस्टामेन्ट* (न्यु योर्क: हार्पर एंड ब्रदर्स पब्लिशर्स, 1948), 742. [8]जॉन बेन्डर-शेमुएल, "एस्तेर," इन *द इन्टनेशनल बाइबल कमेन्ट्री*, रिवाइज्ड एड., एडिटर एफ़. एफ़. ब्रूस (कार्मेल, न्यु योर्क: गाइडपोस्ट्स, 1986), 511. [9]ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर, *अ सर्वे ऑफ़ ओल्ड टेस्टामेन्ट इन्ट्रोडक्शन*, रेव्ह. एन्ड एक्स्प. (शिकागो: मूडी पब्लिशर्स, 2007), 395-96. [10]एक समय में पर्सपोलिस, एक्बताना और बेबीलोन अन्य राजधानियाँ रहीं।

[11]एहेस्वेरस, फ़ारस के शीर्षक क्षयर्ष की समानता में इब्रानी शब्द है. यह राजा जिसका वर्णन एज्रा 4:6 में भी किया गया है वह यूनानियों में ज़क्सीस के रूप में जाना जाता था. वह कुस्रू II (539-530), कैम्बिसिस II (530-522), और दारा I (522-486) के राज्यों के बाद आया। (आर. के. हैरिसन, "एहेस्वेरस," में *द इन्टरनेशनल स्टेन्डर्ड बाइबल एन्साइक्लोपीडिया*, रिवाइज्ड एड., एडिटर जेफ़्री डब्ल्यु. ब्रोमिले [ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979]: 1:76.) [12]यह चूक परमेश्वर के व्यक्तिगत नाम, "यहोवा" (יהוה, *YHWH*) अथवा "प्रभु," के साथ साथ सामान्य पदवी "परमेश्वर" (אֱלֹהִים, *'ऐलोहिम*), शीर्षक "प्रभु" (אָדוֹן, *'अदोन*), और किसी अन्य दिव्य शीर्षक के चारों ओर घूमती है। [13]चार्ल्स आर. स्विनडोल्ल एन्ड केन गिरी, *एस्तेर-अ वुमन फ़ोर सच अ टाइम एज़ दिस*, बाइबल स्टडी गाइड (फ़ुलरटन, केलिफ़ोर्निया: इनसाईट फ़ोर लिविंग, 1990), 1. [14]बिल टी. अर्नोल्ड एन्ड ब्रायन ई. बेयर, *एन्काउन्टरिंग द ओल्ड टेस्टामेन्ट: अ क्रिश्चियन सर्वे* (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1999), 272. [15]देखें 9:27, जो उन लोगों के बारे में बताता है जिन्होंने यहूदियों के साथ "स्वयं को मिला लिया." [16]लेस्ली सी. एल्लन एन्ड तिमोथी एस. लानियाक, *एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, न्यु इन्टरनेशनल बिब्लिकल कमेन्ट्री (पीबॉडी, मैसाचुसेट्स: हेन्ड्रिकसन पब्लिशर्स, 2003), 174. [17]उपरोक्त, 178. [18]उदाहरण के लिए देखें, सी. एफ़. कैल, *द बुक्स ऑफ़ एज्रा, नहेम्याह, एन्ड एस्तेर*, ट्रान्स. सोफ़िया टेलर, बिब्लिकल कमेन्ट्री ओन द ओल्ड टेस्टामेन्ट (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, तिथि अज्ञात), 304-12. [19]लेविस बेअल्स पैटन ने असम्भावनाओं को सूचीबद्ध किया जिसने उसे सन्देह करने के लिए अगुवाई दी कि "क्या एक ऐतिहासिक सार अपनी कहानी के नीचे बना रहता है" और उसने निष्कर्ष निकाला कि एस्तेर मात्र एक पौराणिक कथा है जो एक प्राचीन राजा के दरबार में तैयार की गई। (लेविस बेअल्स पैटन, *द बुक ऑफ़ एस्तेर*, इ इन्टरनेशनल क्रिटीकल कमेन्ट्री [न्यु योर्क: चार्ल्स स्क्राइबन्र्स सन्स, 1908], 75.) लानियाक ने कहा, "सामान्यतया, पैटन की टीका के समय से इस शताब्दी में एस्तेर की विद्वता ... ने इस पुस्तक के ऐतिहासिक मूल्य के अपने आँकलन को बनाए रखा है" (एल्लन एन्ड लानियाक, 178)। [20]हैरिसन, *इन्ट्रोडक्शन*, 1098; ए. डब्ल्यु. स्ट्रीन, *द बुक ऑफ़ एस्तेर*, द केम्ब्रिज बाइबल फ़ोर स्कूल्स एन्ड कोलेजिस (केम्ब्रिज: युनिवर्सिटी प्रेस, 1907), xiv का संकेत देता है।

[21]*द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेन्ट्री*, वोल. 4, *1 राजा-अय्यूब*, एड. फ़्रेंक ई. गेबलाइन (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1988), 778 में एफ़. बी. ह्युई, जुनियर, "एस्तेर।" [22]हेरोडोटस *हिस्ट्रीज़* 7.61, 114. [23]उपरोक्त, 7.114; 9.112. [24]जे. स्टेफ़ोर्ड राइट ने कहा कि "वशती" उसके फ़ारसी नाम का इब्रानी रुपान्तर था और इसी नाम का यूनानी रुपान्तर "अमेस्ट्रिस" था। (जे. स्टेफ़ोर्ड राइट, "द हिस्टोरिसिटी ऑफ़ द बुक ऑफ़ एस्तेर," इन *न्यु पर्स्पेक्टिव्ज़ ओन द ओल्ड टेस्टामेन्ट*, एड. जे. बार्टन पेन [वाको, टेक्सास: वर्ड बुक्स, 1970], 40-43.) बेन्डर-शेमुअल, 509 में ऐतिहासिक पुनः निर्माण देखें. [25]अन्य प्रकट ऐतिहासिक अन्तर भी विवरण देने की योग्यता रखते हैं और जैसे वे पाठ्य में दिखाई देते हैं उसी प्रकार से उन्हें देखा जाएगा. इनमें से बताई गई अनेक ऐतिहासिक अशुद्धियों पर ह्युई, 788-93; और आर्चर, 396-98 में विचार विमर्श किया गया है। [26]रूबेन रेट्ज़लेफ़ एन्ड पॉल टी. बट्लर, *एज्रा, नहेम्याह एन्ड एस्तेर*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज़

(जोप्लिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस, 1979), 261-62. [27]ह्युई, 783. [28]एस्तेर में जोड़ी गई बातों में, "'प्रभु' अथवा 'परमेश्वर' शब्द पचास से भी अधिक बार आता है" (ब्रूस एम. मेट्स्गर एन्ड रोलैंड ई. मर्फ़ी, एड्स., *द न्यु ओक्सफ़ोर्ड एनोटेटिड बाइबल विद द अपोक्रिफ़ा*, रेव. एन्ड एन्ल. [न्यु योर्क: ओक्सफ़ोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, 1991], 41AP)। [29]धार्मिक अभ्यासों का न होना सुनिश्चित नहीं है क्योंकि यह पुस्तक उपवास के बारे में बताती है (4:16) जो प्रार्थना के साथ जुड़ा हुआ एक धार्मिक अभ्यास है। [30]मार्क मांगानो, *एस्तेर एंड दानिय्येल*, द कॉलेज प्रेस NIV कमेन्ट्री (जोप्लिन, मिसौरी: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 2001), 20.

[31]माइकल वी. फ़ोक्स, *कैरेक्टर एन्ड आइडियोलॉजी में द बुक ऑफ़ एस्तेर*, 2न्ड एड. (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एड्र्समेन्स पब्लिशिंग कं., 2001), 255-56. [32]एक "कियेस्टिक" व्यवस्था एक ऐसा ढाँचा है जो विपरीत समानान्तरता के एक नमूने में व्यवस्थित किए गए एक वाक्य अथवा भाग में क्रमानुसार आने वाले तत्वों को शामिल करता है. इसे यूनानी अक्षर c (*खी*) के अनुसार नाम दिया गया। [33]येहुडा टी. रड्डे, "किआज़्म इन यहोशु, न्यायियों एन्ड अदर्स," *लिंग्विस्टिका बिब्लिका* 27-28 (सेप्टेम्बर 1973), 9-10; मांगानो, 28 के द्वारा उद्धृत किया गया। [34]चार्ल्स आर. स्विनडोल्ल, *एस्तेर: अ वुमन ऑफ़ स्ट्रेन्गथ एन्ड डिगनिटी* (नावशिल्ले: थोमस नेल्सन, 1997), 37-38.